Metro Card की **Machine** से **Card** को **recharge** करने के लिए ग़ालिब को हर तीसरे दिन झूझना पड़ता है अरे मिर्ज़ा ग़ालिब नही , ग़ालिब निहार , निहार के **room mate** के होटो पर, **mobile** ओर **what aaps** निहार का यही नाम है, **Deposit A.T.M Machine** ओर **Metro card Machine** निहार को आज तक समझ नही आई.

3 दिन से मैली **jins** खुद के **Design** से **Printed Black T shirt** के उपर **Dark Blue Lather Jacket** ,पालिका बाजार से सस्ते **stylish Frame** me महंगे **glassic** ,ओर पीठ पे टगे **Black Bag** मे **laptop** एक **Dairy** ओर एक **I Pad,** निहार अपने ही शहर मे Tourist कि तरहा घूमता है ,29 साल 4 महीने की उम्र मे निहार Style के मामले मे D.U के Fresher को मात देता है .लंबे चहरे पे **BLeched French cut** निहार पे मस्त लगती है.

Bank के **A.T.M** से आप पैसे निकाल रहे हो आप के पीछे लंबी **Line** हो ओर **Machine** आप का **Card accept** ना कर रही हो तो आप की जो हालत होती है बिल्कुल वैसे ही हालत अभी मेट्रो कार्ड रिचार्ज कर रहे निहार की है

Excuse me ...पीछे से एक मीठी सी आवाज़ आती है

Excuse me आप का हो गया

निहार- **Machine card accept** नही कर रही है (निहार बिनां मुड़े झुंझला कर जवाब देता है

may I help u

इतना सुन कर निहार पीछे खड़ी नंदनी को रास्ता देता है ,निहार की नज़र जैसे ही नंदनी के चहरे पे पड़ती है

निहार मन ही मन मे

निहार - ओ तेरी बेटे की,खून **December** मे जून ,

निहार रोज सुबहा सुबहा अपनी शायरी मे जिन खूबसूरत चहरो को तराशने के लिए उन्हे ढूँढने घर से एसे निकलता है, जैसे "हवा खुश्बुओ मे रंग ओर किसी बच्चे की नज़र पतंग" . नंदनी उन चहरो में से एक है

खुले, आधे गीले आधे सूखे state बालो मे उस चहरे को निहार की नज़र इस तराहा निहार रही थी,जैसे मोर बादलो को निहारता है,

कब नंदनी ने निहार के हाथ से **Metro Card** लिया,कब दूसरे हाथ से सो का नोट खिछा ओर कब **Card Recharge** कर निहार को वापस पकड़ा दिया निहार को कुछ पता नही

निहार अचानक **Flash Back** से बाहर आता है, ओर भाग कर **Checking line** मे लग जाता है , सुबहा 10 बजे **office** जाने वालो की भीड़ ज़यादा होने के कारण **Time** ज़यादा लगता है, **Ladies checking** की **Line** हमेशा की तरहा कम ही होती है ,निहार की नज़र जब तक नंदनी को Card Punch करवा **Escalator** से उपर तक छोड़ कर नीचे वापस आती है ,निहार खुद को ओर अपने Bag को check करवा चुका था ,निहार दाए हाथ से **Bag** उठा बाए हाथ से Card को **Punch** करवा, जीने से **Platform** की तरफ भागता है, तो **Platfor**m पे खड़ी **Metro** के दरवाजे बंद होते देख निहार skit मरता हुआ रुकता है

निहार - **o shit**

कढ़ाई के उपर से Plate हटाने के बाद , **Office** के लिए घर से दूर निकल कुछ याद आने के बाद ओर सचिन के **Out** हो जाने के बाद जो **expression** हर **Indian** के **Face** पे होता है बिल्कुल वही **expression** निहार के चहरे पे भी है .

दाए हाथ से लटकता ज़मीन को छूता **Bag ,** ओर चहरे पे उपर लिखे **expression** ओर तेज़ी से दूर भागती **Metro** को अगर**Long Short** देखा जाए तो **scene filmy** लगता है

लेकिन इस उदास सीन के साथ आप को उदास होने की ज़रूरत नही है , क्यो की जिस लड़की के लिए 38 सीढ़िया निहार 23 कदमो मे चढ़ गया, वो पीछे ही खड़ी है

Gate तक भरी **Metro** मे चढ़ना **delhi** मे रोज सफ़र करने वालो के लिए आसान नही तो बाहर से आए लोग तो दूसरी **Metro** का इंतजार करंगे ही

अभी इस सदमे से निहार बाहर निकला ही था की दूसरी **Metro** धुंध को चीरती **Horn** बजाती हुई **Platform** की तरफ़ बढ़ती है,निहार नीले कलर मे बड़ा बड़ा 8 लिखा देख **Platform** मे पीछे की तरफ भागता है ओर **Last Boogie** के पहले दरवाजे से**Entry कर** कोने की सीट लपक लेता है, **Jacket** के अंदर की उपरवाली **जेब** से **Mobile** ओर **Ear phone** निकाल **ear Phone** की सफेद तार को सुलझा कर कानो से लगा निहार जैसे ही **Radio On** कर सिर उपर उठता है, उसके नज़र जहा रुकी होती है वही ठहर जाती है,

जिस के पीछे निहार 32 सीढ़िया एक सास मे चढ़ गया था, वो उसके सामने ही बैठी थी, निहार बिना **time** गवाए अपने **Bag** मे से**Dairy** निकांलता है पनो मे से Pen को खिचता है, सामने सीट पर बैठ किताब पढ़ती नंदनी को देख कुछ सोच, लिखने की कोशिश करता है ,

निहार कभी उपर देखता, फिर कुछ सोचता फिर किसी **sketching artist** की तरहा **pen** को धीरे - धीरे घिसता ओर फिर उपर देखने लगता

राजीव चोक जैसे जैसे पास आता जाता **Metro** मे भीड़ भड़ती जाती, निहार के सामने खड़े लोग निहार को इस तरहा तंग कर रहे थे जैसे **T.v** देखते वक़्त कोई सामने खड़ा हो गया हो,प्रगती मैदान ओर राजीव चौक के बीच नंदनी कहा उतरी निहरा को पता नही चला,

एसा नही था की अपनी शायरी मे हुस्न तराशने वाली निहार की कलम को दीन दुनिया की खबर नही थी,निहार की कलम से जहा इश्क़ की सोंधी सोंधी खुश्बू उठती, वाहा सुलगते शोलो की तपन भी थी, निहार सुबहा चाय की चुस्कियो के साथ net पे on **line News Paper** पढता , 16/12 की **Bus Gang Rape** की खबर ने निहार को भी अंदर से झींझोर दिया था,निहार का बस चलता तो वो**India Gate** पे खड़ा कर सभी **Rapist** को तोप से उड़ा देता, delhi Bus **Gang Rape** के बाद हर अंजान लड़की की नज़र निहार को भी **Rapist** की नज़र से देखती,तो निहार की नज़रे शर्म से झुक जाती .

वैसे तो निहार का कोई ठिकाना नही था, मगर जयदा तर वो बरखंबा रोड पे **Oxford Book Store** मे पाया जाता, वहा चा बार मे बैठ वो चाय पिता ओर कलम घिसता , किताबे ओर लोगो के चहरे पढ़ने का शोक अब जैसे निहार का पैशा बन चुका था,वाहा बैठे लोगो मे लगभग रोज आने वाले लोग निहार को जानते, निहार की शेरो शायरी सुनते, निहार लोगो की

बांतो मे घहरा Interest लेता, निहार वाहा बैठे **couples** को देख ऐसे **Dairy** मे लिखता जैसे वो उन्हे सामने बिठा उनकी तस्वीर बना रहा हो.निहार अपने बारे मे बात कम करता ओर दूसरो की जयदा सुनता .

निहार की **Friend List** मे लड़को से लड़कियो की **List** लंबी थी, ओर लड़की बोले तो एक से एक खूब सूरत, हर लड़की निहार से मिलने घर से तैयार हो कर ऐसे आती जैसे शादी मे जा रही हो , अगर आप को **delhi** मे खूबसूरत लड़कियो को देखना हो तो एक दिन निहार के साथ घूम ले, आप यही कहंगे की दुनिया मे जन्नत दो ही जगह है एक निहार की संगत मे ओर दूसरा देल्ही **Metro** की गति की दिशा मे पहले डब्बे मे .

हर लड़की को निहार से मिलने के बाद अपने खूबसूरत होने का एहसास पहले से कुछ जयदा होता,निहार किसी से तू कर के बात नही करता था, निहार की जूबा उसकी शायरी की तरहा पाक ओर सॉफ थी,निहार ने कभी किसी लड़की के कपड़ो मे झांकने की कोशिश नही की,वो कहते है ना की खूबसूरती तो देखने वालो की नज़रो मे होती है,जिस तरह हीरे की चमक रोशनी की मोहताज़ होती है,उस तरहा निहार को जानने वाली हर हसीना उसकी नज़रो मे आना चाहती थी,निहार को अकेला देख अक्सर लड़किया उसके सामने बैठ जाती ओर कहती ,मुझ पे भी कुछ लिखिए ना

निहार की ज़िंदगी घर से बाहर जितनी शायराना थी घर मे भी उतनी **excited ,**3 कमरो के **Flat** 6,7 दोस्त की रोज महफ़िल लगती,सभी शाम की चाय की चुस्कियो के साथ की निहार तारीफ के पुल बाँधते,सोने ओर उठने मे किसी को कोई जल्दबाज़ी नही,डिनर करते व्क़त अख़बार पढ़ते अचनाक **Movie** के **Night show** का **Program** बनाते, **Bear** का दौर **Saturday** रात से शिरू हुआ कई बार **Sunday Late Night** तक चलता, महीने की अगर Bear की बोतले बेचीं जाती तो उसमे अख़बार का बिल भर के भी पैसे बच जाते, निहार हर दिन को एक नया दिन समझ कर जीता, निहार को कही पहुचने की कोई जल्दी नही थी, उसने तो 29 साल मे ही जैस **retirement** ले ली थी,

Escalator होते हुआ भी निहार **Lift** का **Wait** करता, निहार को **Lift** मे लगा शीशा बड़ा पसंद था,सुबहा उठने के बाद चहरे का नुमैइना वो वही करता था ,

निहार इतना आलसी था की **lift** मे **Enter** कर कभी खुद **Button** नही दबाता था, **Lift** को उसकी मर्ज़ी से ही चलने देता, आज जैसे ही **Lift** का दरवाजा बंद होता है तो वैसे ही वापस खुल जाता है, निहार शीशे से खुद के चहरे से नज़र हटा जैसे ही सामने झांकता है उसकी धड़कने फिर तेज हो जाती है, उसकी **Dairy** मे अभी भी वो पन्ना खाली था,जिस पर लब्जो मे उसने किसी को तराशना शिरू किया था

निहार आज जानबुझ के नंदनी के सामने आ कर बैठ जाता है, निहार कभी नंदनी को देखता तो कभी **Metro** के शीशे से बाहर कभी कुछ सोचता ओर **Dairy** पे कलम घिस देता ,**Pen** से जयदा भाव निहार के चहरे को छूते, निहार कब लिखता लिखता उत्तम नगर पहुच गया निहार को पता ही नही चला ,

आज निहार के पास सुनांने को काफ़ी कुछ नया है, सुबहा से अब तक निहार ने **Face Book** पे चा बार मे बैठे 2 काफ़ी वाहा वाहा बटोर ली है,निहार रोज कुछ नया **Page** पे डालता ओर **500 Likes** बटोर लेता

8235 Friends ,**6032 Page like and 3754 Friends On line** ,ये निहार का **Favorite status** मे से एक है

रोज की तराहा निहार 5 बजे अपना बोरी बिस्तरा समेट ही रहा था , की ...

नंदनी - **Excuse me ,**

Laptop का **Charger Bad** मे डालता हुआ निहार सिर उठा कर उपर देखता है

नंदनी - मेरा **sketch** वापस करो

Charger Bag मे डालते निहार का हाथ वही रुक जाता है

निहार - कौन सा **Sketch ?**

नंदनी - वही जो आज आप ने यमुना **Bank** से उत्तम नगर तक अपनी **Dairy** मे बनाया है

निहार - मैं **Sketching** नही करता, मैं तो तो ...

निहार की नज़र तो जैसे चहरे पर ही अटक गई थी, निहार क्या बोल रहा था खुद निहार को भी पता नही

नंदनी **Table** पे पड़ी निहार की **Dairy** उठाती है ओर गुस्से मे उसके पन्ने फ़रोलना शिरू करती है,नंदनी को अपना **sketch** नही मिलता,जिस **Page** पे **Pen** लगा था नंदनी उस **Page** को फाड़ के ले जाती है,

निहार के चहरे की रोनक दिन ढलने क साथ ही ढल चुकी थी

कई बार हमे अपनी ग़लती से जयदा उसकी सज़ा बड़ी लगती है, निहार कभी तो ये सोच के खुश होता की उस समय पास कोई नही था वरना ज़यादा **Insult** होती ओर ये सोच कर परेशान की उसकी शायरी से किसी को परेशानी भी हो सकती है

oxford से लेकर निहार की दास्तान सुन **room mate** के पेट पकड़ के लोटपोट हो कर ठहाकों की आवाज़ तक निहार कोमा **में** ही था

पेट पकड़ के ठहाके मारने का सिलसिला निहार के **room** से थोड़ी सी दूर press **Apartment** के **Flat** no 57 मे भी था ,
नंदनी तूने उस लड़के के सामने उस लड़के की **Dairy** मे से पेज फाड़ लिया

ये **Dialog** ना जाने कितनी बार **repeat** हो चुका था ओर ना जाने कितने ठहाकों लग चुके थे

सीमा - नंदनी तूने तो **delhi** मे कदम रखते ही आशिको की छुट्टी कर दी

नंदनी की पुरानी सहेली सीमा अपनी हसी रोक सीमा से कहती है

नंदनी - यार मुझे **books** खरीदने **C.P** जाना था , मगर वो लड़का मुझे देख जाने क्या बनाई जा रहा , मैं उसे कल की **Notice** कर रही हू , कल उसका **card** क्या **Recharge** कर दिया पीछे ही नही लग गया, आज तो मैने उसे उत्तम नगर तक घुमा आई

coffee पीती रज़ाई मे बैठी नंदनी ओर उसकी सहलियो के ठहाकों की आवाज़ फिर flat मे गूँज उठती है अपनी **senior** क साथ**Press Apartment** मे रह रही नंदनी ने पिछले हफ्ते ही **P.H.D** के **Exam** दीए है, ओर परसो ही delhi आई है

16\12 को हुए हादसे से जीतने **unsafe delhi** की लड़किया खुद को महसूस करती है उस से कही ज़यादा डर बाहर से आने वाली लड़कियो को लगता है, उन पर उठती हुई हर नज़र उन को अश्लील लगती है,देश भर मे दिन रात **News channel** पे चल रही 16/12 की **News** ने अक बार घर से निकालने के लिए लड़कियो को सो बार सोचने पे मजबूर कर दिया था, एसे माहोल मे नंदनी ने अपने घर वालो को ना जाने कैसे **convance** किया होगा

नैनी ताल की रहने वाली **28** साल की नंदनी, उपर से ज़ितनी घंभीर दिखती है **Actually** अंदर से उतनी है नही, नंदनी मोटे चश्मे के पीछे घंभीर लगने ओर रहने की कोशिश तो करती है, मगर लाल कायलो पे भुन्ता भुट्टा, गोल गप्पे खाते लोगो के चहरे के **expiration** , ओर ममियो के गोदी उठाए बच्चे, नंदनी से उस नंदनी को ज़्यादा देर तक दूर नही रख सकते, असल मे जो वो है ,

असल नंदनी 10 के 3 गोल गप्पे गिन के नही खाती,असल नंदनी को होंठ थोड़ा सा हिला के हस्ने की बजाए ठहाके मारना पसंद है, असल नंदनी शहर की लड़कियो की तराहा ,दूसरो के सामने **show off** नही करती की वो चाय नही पीती ,जब चाय की तलब उठती है तो वो पेड़ के नीचे **Plastic** के **cup** मे भी मट्ठी के साथ चाय पी लेती है.असल नंदनी लड़का या लड़की देख क दोस्त नही बनाती, नंदनी एक नज़र मे किसी को **judge** नही करती,असल नंदनी करने के बाद मन मे मंथन करती है की क्या उसने सही किया या ग़लत ओर ग़लत को सही करने की हर मुमकिन कोशिश उसे सब से अलग करती है
नंदनी को सिर्फ़ **metro station** से **Apartment** तक का रास्ता याद रखना था , **metro** आने से रास्ते पहले से आसान लगने लगे थे, नंदनी की सभी सहेलिया काम पे निकल जाती, नंदनी 10 ब्जे के आस पास घर से निकलती ,अकेले ही जंतर मंतर, पालिका बाजार ओर जनपथ घूमती,ओर 4 ब्जे के आस पास वापस **room** को रवाना हो लेती

मगर नंदनी के **purse** मे पड़े वो 2 कागज के पन्ने पे मानो निहार का ही पता लिखा हो, नंदनी आज सुबहा से अपने **purse** मे किसी की अमानत लिए बरखंबा रोड क आस पास घूम रही थी,नंदनी अनुमान लगा रही थी की कल निहार वही मिला था तो आज भी वही पाया जाएगा नंदनी ने कई बार कोशिश की मगर **oxford book store** की सीढ़िया चढ़ नही पाई, नंदनी हिम्मत कर नंदनी सीढ़िया चढ़ ही जाती है,**books** ढूँढने के बहाने वो चा बार मे नज़र मार के देखती है की निहार वाहा बैठा है ? के नही, जैसे ही देखती है की निहार अकेला बैठा है वो निहार की Table क पास जाती है

नंदनी - ये लो तुम्हारे पन्ने , ओर आगे से मुझ से दूर रहना *(नंदनी कल dairy से फाड़े हुए पन्ने वापस करती हुई कहती है)

नंदनी चहरे पे एक झूठा सा गुस्सा लिए,कड़क आवाज़ मे बोल झट से पलट जैसे ही चलने लगती है

जाती हुई नंदनी को निहार पीछे से आवाज़ लगता है

निहार - **Thanks**

निहार नंदनी के लिए chair खिचता हुआ

निहार - **have a seat please**

नंदनी झट से पलट निहार की तरफ़ आती हुई बैठ जाती है

निहार -आप चाय लेगी

निहार जवाब आए बिना **order** दे देता है

निहार - **2 cup tea please**

नंदनी - मुझे ये बिल्कुल पसंद नही कोई बिना मेरी **permission** के मेरी तस्वीर ले या मेरा **sketch** बनाए,आप के **pages** जैसे मैने bag मे डाले थे वैसे ही वापस दे रही हू मैने खोल के नही देखे

नंदनी एक सुर मे सब बोल जाती है

निहार थोड़ा सा होंठ भिच के हस्ता हुआ हाथ बढ़ाता हुआ

निहार - **by the way my self** निहार

नंदनी निहार के बढ़ाए हाथ को **ignore** कर कुर्सी के साथ पीठ लगाए 2 चेज़ो का इंतजार कर रही थी एक तो निहार ने उसे देख कर Page पर जो बनाया था ओर दूसरी चाय का

नंदनी - हा नाम अच्छा है पर मे तुम्हे अपना नाम क्यू बताउ ,

नंदनी के इस रवैये मे **arrogant** ना हो कर एक चंचलता है,अक बनावटी सा रूठा पन ओर एक़ मासूमियत थी नंदनी अपने दोनो कंधो को हिला कर जिस तरहा बात कर रही थी,निहार उन अदाओ पे जाने कितने कवितांए लिख सकता था

नंदनी - आप की तरहा आप कि चाय भी **Lazy** है

निहार - चाय **Lazy हो सकती** है पर मैं नही,मगर आप को कैसा पता चला की मैं **Lazy** हू

नंदनी- आप के **nails ,** देखो कितने गंदे है ओर आप की shirts के **arms** के **corner**

निहार नंदनी के **notice** करने के तरीके पे हैरान था, नंदनी के गुस्से मे एक अजीब तरहा का अपना पन था,

निहार **water** को चाय लाता देख

निहार - लो चाय आ गई

निहार **water** के **Table** पे चाय के गिलास रखने क साथ ही चाय का गिलास उठाता है ओर **sip** मांरता है

नंदनी - आप **Metro** मे जो मेरा sketch बना रहे थे ना

निहार दूसरा सीप मारते हुए

निहार - नही तो

नंदनी - मुझे झूठ बोलने वाले लोग पसंद नही ,तो **Metro** मे बार 2 मेरी तरफ़ देखकर आप **Dairy** मे क्या कर रहे थे ,

निहार - आप चाय लीजिया ना , आज कल चाय जल्दी ठंडी हो जाती है(निहार फिर बात काटने की कोशिश करता है)

नंदनी गिलास उठाते हुए

नंदनी - आप ने बताया नही

निहार सिर झुका कर सिर मे उंगली से खुजली करता हुआ कहता है

निहार - मैं आप पर एक Poem लिख रहा था

चाय को बार बार फूक मार ठंडा कर रही नंदनी जैसे ही सुनती है उस की मूह से फूक तेज निकल जाती है ओर चाय की छीटे table पे गिर जाती है

नंदनी - क्या कहा आप मुझ पे **Poem** लिख रहे थे

नंदनी - लड़को को लड़कियो की Photo खिचते देखा है, उनके **sketch** बनाते देखा है, मगर लड़कियो पे ग़ज़ल लिख कर लाइन मारने का तरीका पहली बार देख रही हू**,i don't think so** की इस तरहा से लड़किया फस सकती है.

निहार - मैं आप पे Line नही मार रहा था ओर ना ही आप को फसाने के लिए ग़ज़ल लिख रहाथा **by the way its my profession i m doing my job**

नंदनी - मतलब लड़की के सामने बैठ उस पर कविता लिखना आप का **Profession** है ?

निहार - वो लड़की मेरे लिए सिर्फ़ लड़की नही है, **she is inspiration for me ,** मैने कभी किसी लड़की को **impress** करने की कोशिश नही की

नंदनी - ओ पूरव ओर पस्चिम के मनोज कुमार,कहानी मत सूनाओ मैं आप के जैसे लड़को को अच्छी तराहा जानती हू, हर लड़की पे**Line** मारते हो, जो फस गई तो ठीक, नही तो "तू नही तो ओर सही ओर नही तो ओर सही",लड़की ने **make up** पे चाहे जितना **time** लगाया हो, मगर **comment** उसकी दुकान पे ही करते हो, हर रात को नई लड़की की **fantasy** करते हो,**dailog** मारते हो लड़की बस ओर **Metr**o के पीछे नही भागना चाहिए , मगर लड़की को छोड़ने जाते घर तक हो, तुम्हारे जैसे **romeo** का प्यार **Metro** से शिरु होता है **bed** पे ख़तम, आप के जैसे **Looser** लड़की के साथ सब करने को तैयार रहते है सिवाए शादी के, ओर जब लड़की छोड़ के चली जाती है तो दाढ़ी बढ़ा **jacket** पहन झोला टाँग मजनू बने शायरी करते घूमते हो,

Bus gang rape का गुस्सा जैसे नंदनी के दिल मे भी था , जो ज्वाला मुखी बन कर निहार पे बरस पड़ा था

नंदनी की आख़िरी **line** ने मानो निहार की दुखती रग पे हाथ रख दिया था,

निहार - **excus**e me आप मुझे जानती ही कितनi है , **Don't judge a book by its cover**

निहार **water** को आवाज़ मारता है , चाय का **bill menu book** मे रखता है ओर अपना सारा समान उठा नंदनी बिना **good by** बोल वाहा से चला जाता है

निहार को एसा लग रहा था की निर्भया के उपर हुआ अत्यiआर का दोषी जैसे वो ही है, उन 7 **rapist** मे से जैसे 1 वो भी हो , **India gate** से **protest** से लोट रहे लड़के ओर लड़किया का गुस्सा भी कही नंदनी की तराहा उन पे ना उतर जाए .

3G **net से fast** चलने वाले निहार का दीमाख का **server** आज **down** था ,निहार के चुप रहना से आज घर मे आज सन्नाटा था, एसा लग रहा था जैसे **North grid fail** हो गई हो ,

sofa पे रज़ाई मे घुसके गरम दूध के गिलास से अपने होंटो को गरम करते **T.V** को एक टुक बिना किसी **expression** के घूरते किरण भाई सुधीर से पूछते है आज अपने निहार को क्या हुआ grid क्यों fail है

किरण भाई कौन ? मतलब आप को किरण भाई से नही मिलवाया ,किरण भाई इन छड़ो के घर के मुखिया है, मतलब सब से बड़े कवारे, किरण भाई पैशे से **soft ware engineer** है पर **lecture** कमाल का देते है,निहार के गले मे अगर कोई घंटी बाँध सकता है तो वो है किरण भाई, 32 साल के किरण भाई उम्र ओर विचारो से Forty Plus लगते है, निहार की अच्छी ख़ासी **Business** छोड़**Poet** बन्ने का फतूर जो निहार पे चढ़ा है, वो एक सब से बड़ी वजहा है निहार से नाराज़ रहने की, एसा नही था की नाराज़गी सिर्फ़ निहार से थी वो श्कस अपनी ज़िंदगी से भी कुछ खास कुश नही था, उस कश्ती को देख कर कोई भी अंदाज़ा लगा सकता था की उस कश्ती ने तूफान के कितने थपेड़े झेले है,

आज से नही वो निहार की पिछले 10 सालो से जानते है जब निहार गणेश नगर के **D Park** का मोड़ पे **Part time me Mo mos** बेचता था, निहार मे कुछ बड़ा करने को ले कर जो जनून था किरण भाई उस के कायल थे,निहार शायरी पहले भी करता था, किरण भाई बस ये सोच कर दाग देते की ये निहार का **Talent** है पैशा नही ,

जब से किरण भाई **Tokiyo** से वापस आए ओर उन्हे पता चला की निहार पे ग़ालिब का भूत सवार है तो ताल्लुक़ात पहले जैसे नही रहे,वैसे किरण भाई भी अपने मे ही रहते है, **3 B.H.K** मे 1 बड़ा रूम सिर्फ़ किरण भाई को **aloat** है, वाहा परिंदा भी पर नही मार सकता, उनके **laptop** का **pass word** से लेकर उनकी अलमारी की चाबी कहा रहती है, ओर अलमारी मे एसा क्या राज दफ़न है,की दरवाजो के मूह पे भी तांले लगे है. वो राज आज तक राज ही था

जैसे हाथ की सभी उंगलिया बराबर नही है वैसे ही इस घर मे सब अलग है,सुधीर भाई अरे वही जो अभी किरण भाई के साथ बैठे t.v को घूर रहे है, वो हरियाणा से है ओर वो भी **Artist** ओर वो भी **Crime branch** मे, अरे हसो मत , क्या हरियाणा के लोग **Crime Branch** मे नही हो सकते या **Artist** नही हो सकते,

उन्हे चश्मदीद लोग अपराधी का हुलिया बताते है ओर वो अपराधियो का sketch बनाते है, एक बार अगर किसी को देख ला तो 6 महीने बाद भी उन का sketch बना दे **ditto** , मगर राज दार है, उनकी एक कान जो सुनता है दूसरे कान को कानो कान खबर नही होती,बाकी 3 member ओर है इस घर मे ,मगर वो इस कहानी मे **Important** किरदार नही है,

नंदनी दूसरो से इतनी परेशान नही थे जितनी परेशान वो खुद से थी, अपने 2 बार सोचने की आदत उसे खुद को कटहरे खड़ा कर देती थी, अपने **Facebook** मे ना जाने वो कितनी बार निरंजन, नवीन,निखिल ओर ना से शिरू होने वाले तमाम नाम **type** कर चुकी थी मगर उसे निहार याद नही आ रहा था, निर्भया के **Rape** का गुस्सा वो निहार पे उतार तो चुकी थी फिर वो क्या चाहती थी निहार से,कोई इतना सीधा कैसा हो सकता है कोई लड़कियो की इतनी इज़्ज़त कैसे कर सकता है? ,या कैसा हो सकता है की कोई लड़कियो की**Fantasy** करने की बजाए उन के सामने बैठ उन पे ग़ज़ल लिखे,कटहरे मे खड़ी नंदनी का मुजरिम दिल ,नंदनी के वकील दिमाग़ के इन तमाम सवालो का जवाब मानो **Face book** मे ढूँढने की जदो जहद मे लगा था,

आख़िर मे नंदनी निहार क ढूँढ ही लेती है, दूसरो की तरहा निहार भी **Profile Pic** मे ज़्यादा **Handsome** लगता है, निहार F.B किसी **celebrity** से कम नही था , 8235 **Friends ,** ओर 10,325 Page Likes , ओर नंदनी ओर निहार के 45 mutiyal friend ये देख कर नंदनी हैरान रह जाती है नंदनी के **teenager cusin** से लेकर नंदनी के **P.H.D** के **Lacturar** निहार के **Friend list** मे शामिल थे,

Tooth Paste करने से पहले निहार **FB** का **a/c check** करता , 25 से **30 Friend Request** 75 से 80 **notification** ओर 30 से 35 mesage , निहार बिस्तरे मे ही निपटा देता, कल शाम नंदनी के साथ बहस का निपटारा निहार ने FB पे रज़ाई मे ही कर लिया था **friend request** का साथ एक लंबा सा **sorry message** ओर **Page like** , एसा था मानो रात की चढ़ि को सुबहा नीबू पानी से उतारा हो.

निहार आज पूरे **redam** मे था, धक्का मार के **start** होने वाला आज **self start** हो गया था,निहार नंदनी को जहा 2 मिली थी निहार आज **expact** कर रहा था की शायद आज भी वो वाहा मिलेगी ना चाहते हुआ भी निहार उसी वक़्त का इंतजार कर रहा था जब पहली 2 बार नंदनी उस से मिलने आई थी,निहार को FB पे chat करना पसंद नही वो **Off line** ही रहता है फिर भी उस का f**riends** उसे **off line** ही **message** करते रहते,

एक **Poet** की नज़ारो से कुछ नही बच सकता चाहे **Metro** मे दरवाजे के किनारे **what aap** अपने **Boy friend** को भेजे **masseg**e का जवाब का इंतजार करती कोई **teen age college** जाती लड़की, सामने देख के **message** आने की बीप सुन smile के साथ फिर **mobile** मे देखने लगती हो, या निर्भया कांड पे **protest** करते J.N.U के लड़के लड़किया जिन पर**december** की सर्दी पे ठंडा पानी गेरा गया हो ,

अगले दिन निहार जैसे ही 11,12 ब्जे **oxford book center** पहुचता है तो क्या देखता है की नंदनी पहले से ही वाहा मोजूद है ओर 3,4 कप चाय पी चुकी है,एक दूजे को देख दोनो की नज़रे शर्मा जाती है जैसे वो पहली **Date** पे आए हो, नंदनी आज पहले से खूब सूरत लग रही थी **long coat** गले मे म्फलर **long shoes** ,ओर सर्दी के कारण नंदनी का गोरे गालो पे गुलाबी रंग,मानो किसी ने ice creem पे **cherry** रख दी हो .

नंदनी **chair** से उठती है ओर smile के साथ निहार की तरफ देखती है,निहार नंदनी की **Table** पे अपना **laptop** का **Bag** रखता है

नंदनी - मुझे **verbaly sorry** नही कहाँ आता, इस लिया 2 Page का **sorry noets** लिखा था**, Being a poet i hope u under stand .**

निहार बिना किसी जवाब के **smile** करता हुआ पीछे देख

निहार - **2 tea and two sandwich**

दोनो की एक **smile** दिलो से गीले शिकवे मिटाने को काफ़ी थी , वो कहते है ना दुनिया मे सब से अच्छा रिश्ता वही होता है जो एक smile के साथ पहले जैसा हो जाता है

निहार - आप **Delhi** की नही लगती ?

नंदनी - **i m fro**m नैनीताल , पर आप को कैसा पता चला,

निहार - आप के **FB profile** से

नंदनी - **ooo**

निहार - आप **delhi** मे नई है

नंदनी - ये कैसा पता चला ?

निहार - आप के हाथ मे इस **Metro Map** से

नंदनी -oo , है यार ये red **line, blue line** समझ ही नही आती **,sorry** मैने तुम्हे ,मतलब आप को यार बोला.

निहार - its ok ,यहा job ढूँडने आई है आप ?(निहार sand vich की एक bite के बाद चाय का सीप लगाते हुआ पूछता है)

नंदनी - ये कैसे पता चला ?

निहार - पता नही चला , आप से पूछ रहा हू

नंदनी -oo , जॉब नही , यहा जॉब ढूँढने के बहाने से आई हू

निहार - मतलब

नंदनी - **Actul**ly मे यहा अपने **boy friend** को ढूँढने आई हू

निहार - कहा रहता है

नदनी - पता नही

निहार - कहा **job** करता है ?

नंदनी - पता नही

निहार - पक्का d**elhi** मे ही है

नंदनी - पता नही

निहार - मतलब ,

नंदनी - मतलब पता नही
निहार - तो ढुंढो गी कैसे ?

नंदनी - पता नही

निहार - गर उसे पागलो की तरहा ढूँढना ही था तो छोड़ो क्यू ,?

नंदनी - **excuse m**e , आप लड़को को हमेशा ऐसा ही क्यू लगता है की लड़की ही लड़को को छोड़ती है, मैने उसे नही छोड़ा उसने मुझे छोड़ा, शादी से पहले बोला था उसे की मेरा sister से बात कर ले , उसे लगा की वो मेरे बिना रह लेगा, घर वालो ने मेरा रोका कही ओर कर दिया, डर के मारे कुछ बोल ही नही पाई गर बोलती तो किसके लिए ? जो मेरे साथ था ही नही,घर वालो ने 2 **month** के बाद मेरी शादी त्य कर दी,

निहार - तो तुम्हारी शादी ..

नंदनी - अरे नही , मैने तो **shoping** भी शिरू कर दी थी, मेरे मंगेतर ने मुझे **Mobile** भी gift कर दिया था

निहार - तो

नंदनी - तो क्या एक दिन सुबहा सुबहा **Phon**e आया **Phone** पे रोने लगा, मुझ से ग़लती हो **i love u** , मैं तुम्हारे बिना नही रहा सकता ,

निहार - तो

नंदनी - रोते 2 ,Phone काट दिया,अगले दिन **no** change , **mail block fb** पे **block** ओर आज तक कोई **contact** नही

निहार - तो तुमने शादी...

नंदनी - शादी के 10 दिन पहले तक तो सब ठीक था, लकिन अचानक, सोते सोते हिचकिया आनी शिरु हो गई ,अचानक एसा लगने लगा जैसे exam मे fail हो गई हू, अचानक heart beat भड़ जाती, अचानक कुछ भी अच्छा लगना बंद हो गया, एसा पहले कभी नही हुआ अच्छा लगना एसे बंद हुआ जैसे अचानक Light जाने पे कुछ दिखाई देना बंद हो जाता है,एसा पहले कभी नही हुआ,कई बार मन किया की chemist से कोई दवाई ले कर आउ,लकिन उस की दुकान पे जा कर क्या बोलू ?,समझ ही नही आया, अंदर एक शोर सा मचा रहता , जैसे किसी haal मे बहुत सारे लोग आपस मे बात कर

रहे हो,एक दिन जैसे नहा कर dressing table के सामने खड़ी हुई ओर अपनी आँखो से आँखे मिलाई,एसा लगा की मैने कोई गुनहा किया हो,अचानक रोना आने लगा, नेहा बता रही थी मेरे रोने की आवाज़ गली के नुकड तक आ रही थी, डर का पंछी आँसुओ के साथ दिल का पिंजरा तोड़ के उड़ गया,

उस दिन समझ आया की लोग प्यार मे घर से भाग कर क्यू शादी करते है,उस दिन समझ आया की किसी को खो देना क्या होता है,उस दिन लगा की प्यार मे मरना कितना आसान है, ओर जीना कितना मुश्किल,

निहार - तो तुमने शादी की ?

नंदनी - नही,मैने वो Mobile उसे वापस कर दिया, मुझे अक्सर मेरे किए फ़ैसले ग़लत लगते है,मगर ये फ़ैसला जाने क्यू मुझे आज तक ग़लत नही लगा,

काजल कि ओट में नीली आँखों में पड़े नील को निहार से छुपाना नंदनी के लिया आसान न था

नंदनी खाली गिलास को घुरती हुई जैसे होंटो से लगाती है ओर उसे एहसास होता है की चाय तो कब की ख़तम हो गई , नंदनी अपने अतीत से बाहर आती है

नंदनी - i m sorry , आप को बिना काम के ही santy कर रही थी, कई बार होता है ना की बस निकल जाता है सब

निहार - its all right , its my plasure की आप ने अक unknown का साथ अपनी secrate share की

नंदनी - thanks

निहार - o no नंदनी , हमे जब प्यार नही होता तो हम ये सोच कर अच्छा नही लगता की हमारी जवानी बिना किसी Love story के निकल जाएगी, लकिन जब प्यार हो कर चला जाता हैतो हम सोचते है काश ये वक़्त एक बुरे सपने की तरहा होता

नंदनी - एक बात पुछु?

निहार - हा पूछिए ना

नंदनी - कौन है वो.?

निहार -कौन (निहार पीछे मूड के देखता है,)

नंदनी - अरे वही जिसके इश्क़ ने आप को शायर बना दिया

निहार- मतलब

नंदनी - अरे अब रहने भी दो , **Rockstar** तो हमने भी देखी है,वो क्या Dailog मरता है ? Pain दुख, दर्द ,आँसू ,जब तक तकलीफ़ ना हो ना Life मे, कोई बड़ा आदमी नही बनता है

नंदनी ने जैसा Film मे देखा था बिल्कुल वैसे ही style मे Dailog मार देती है

निहार - हः आह आह आ अहहा हहहा आ , very filmy very filmy , एसा सिर्फ़ filmo मे होता है

नंदनी - oo oo आँख मिला के बात करो , ओर अब ये dailog दुबारा मरो

निहार मुस्कुरात हुआ chair पे बैठा table की तरफ़ झुकता हुआ

निहार - एसा सिर्फ़ फ़िल्मो मे होता....

निहार अचानक पीछे की तरफ हटता है उसकी आवाज़ भारी हो जाती है ओर मूह फेर अपने दाए हाथ से आँखो को सॉफ करता है

नंदनी - आ लब्जो से दवा कर दू ,गर दिल को दर्द कुछ ज्यादा है
महबूब छीन के खुदा ने ,हमें हुनर ये नवाजा है

नंदनी **1750 Likes 826 comments** वाला निहार के पेज से पढ़ा शेर निहार को ही सुना देती है

निहार नंदनी की तरफ देखता हुआ ,

निहार - मैं उस से ज़यादा अपनी **Poetry** को प्यार करता था,

नंदनी - तो

निहार - किसी लड़की को ये बिल्कुल अच्छा नही लगेगा की उसका पति किसी गैर लड़की का सामने बैठ कर उसकी तारीफ करे ओर उस पर **Poem** लिखे

किसी **Press Reporter** की तरहा नंदनी के पास सवालो की कमी नही थी, मगर नंदनी के सब सवालो का जवाब निहार ने अपनी एक **Line** मे ही दिया था ,नंदनी के पास जैसे लब्ज ही ख़तम हो गये थे , शायद वो मन ही मन ये समझने की कोशिश कर रही थी की जिस मोहोब्बत के लिए उसने अपने घरवालो का दिल दुखाया सारे समाज मे बदनामी मोल ली ,जिसे ढूंढने के लिया वो शहर शहर भटक रही है उस मोहोब्बत से ज़यादा भी किसी को किसी ओर चीज़ से मोहोब्बत हो सकती है,

निहार नंदनी के लिए इश्क़ के कुरुक्षेत्र मे कृशन भगवान की तरहा थे , जिन्होने मोहोब्बत की सारी गीता नंदनी को एक ही शलोक मे समझा दी थी

नंदनी **Topic chang**e करते हुई कहती है

नंदनी - वो सब तो ठीक है पेर खर्चा कैसे चलाते हो,? ये **Apple** का **Leptop**,**I pad** ,ये **Leather branded jacket**

निहार हस्ता हुआ जवाब देता है

मैने पिछले 5 सालो मे अख़बार से लेकर साल की 2 करोड़ **turn over** की अपनी कंपनी तक बेची है ,सोलहा साल की उमर मे जिस दिन मैने पहला शेर लिखा था मैने त्य कर लिया था की Poet ही बनउगा, मैने दिल को सो बार मार के अपने सपनो जिंदा रखा, चाहता तो रिया से शादी कर सकता था, **Posh area** मे **flat**, एक लंबी गाड़ी, एक खूब सूरत **Girl friend** , ओर एक बड़ा Business , मेरा पास सब था, मगर मैं अपनी वसीहत मे आलीशान महल ओर गाडिया नही छोड़ के जाना चाहता, मैं चाहता हू,मेरे कागज पे लिखे शेर आज से सो साल के बाद भी जवान दिलो मे प्यार के अहसास को अल्फ़ाज़ दे,

नंदनी - **i m sorry** निहार मैने आप को ग़लत समझा , **Actully** मै अभी तक सभी **Poet** ओर **writer** को **loozer** ही समझती थी, **But now i salut u .**

नंदनी कुर्सी से खड़ी हो कर एक फ़ोज़ी की तरहा निहार को सलूट करती है

मोहोब्बत राजकपूर 70ies की किसी पुरानी फिल्म की तरहा होती है जिसे हम वक़्त गुजरने का साथ साथ जितनी बार देखते है उस के डायलॉग , किरदार, कहानी, हम ओर पहले से जयादा समझ आने लगते है,

पिछले एक महीने से नंदनी को delhi जैसे इतिहासिक शहर मे एक **free** के **guide** के साथ साथ एक लाज़वाब शायर भी मिल गया था , नंदनी को घूमना काफ़ी पसंद था , ओर शहर का कोई एसा मशहूर चप्पा नही था, जहा की खाक निहार ने नही छानी हो,राजीव चौक के **metro station** से ले कर पुराने किले तक मे बैठ निहार ने शायरी लिखी थी, निहार जयादा तर वही पाया जाता जहा हुस्न का दीदार होने के chans ज़यादा होते .मगर निहार को अब शायरी लिखने के लिए किसी खूब सूरत चहेरे की ज़रूरत नही थी, ग़ज़ल खुद उसके साथ साथ चल रही थी ,

निहार ओर नंदनी का रिश्ता शायर ओर ग़ज़ल के रिश्ते की तरहा सूफ़ियाना है सर्दी की धूप मे अक्सर **C.P** के **center Park** मे बैठे जब भी नंदनी को देख निहार **Dairy** ओर **pen** निकालता नंदनी एसा **Poze** बना के बैठ जाती जैसे कोई **painter** उसकी तस्वीर बना रहा हो, नंदनी रोज निहार के लिए सज के आती, सज का आना कहु तो शायद ग़लत होगा, नंदनी के गोरे रंग उची लंबी कद काठी पे हरे रंग ओर हर design का कपड़ा suet करते , नदनी को निहार कां घटो तक देखना अच्छा लगता,शयरो की नज़रो ने जब जब किसी हुस्न को छुआ है तो वो ग़ज़ल बन गया,शायरी वो इत्र है जिसे छूते ही हुस्न महक उठता है,

एक तरफ तो bus gang rape के बाद गुस्साए लोग सड़को पे थे india gate तक जाने वाले तमाम रास्ते बंद कर दिए गये थे ,ऑफीस से लड़किया शाम 6 बजे से पहले ही घर पहुचने लगी थी ,राधा कृशन आश्रम मार्ग से , बरखंबा रोड तक के स्टेशन बंद कर दिए गये , वही निहार ओर नंदनी इन बतो से बेपरवाहा हुसन ओर शायरी की एक बेहतरीन दास्तान लिखने मे मसरूफ़ थे

14 febrary को होने वाले कवि सम्मेलन की त्यरिया पूरे शबाब पे थी **,center park** मे निहार जो ग़ज़ल लिखना शाम को वो room mate के मूह से काफ़ी वाह वाही बटोरती ,14 feb को लेकर निहार के साथ सभी **room mate excited** थे , एसे मोको पर घर पे जशन का माहौल रहता, रोज चिकन बनता, एक हफ्ते मे कबाड़ी **minimum** 3 बार तो Gate खटखटा ही देता,
दूसरे कमरे मे अपने **Leptop** पे काम कर रहे किरण भाई भी निहार की शायरी के मुरीद थे ,मगर मूह कभी वाह वाही नही निकली थी,

निहार के कबीले मे सुधीर भी कुछ कम talanted नही, अगर उन्हे कोई किसी का हुलिया बता दे तो हू ब हू तस्वीर बना दे,सुधीर अक्सर सुबा 5 ब्जे उठ कर **skeching** की **Practice** करता,सुधीर अक्सर अपनी आँखे बंद करता ओर अपने staff मे से किसी एक चहरे को याद कर उसे कागज पे उतार देता, वो खुद से इस मुकाबले मे कभी नही हारा था

आज मुश्यारा होने के कारण कल रात निहार जल्दी ही सो गया , सुधीर की नज़र निहार के बिस्तर के पास पड़ी **Dairy** पे पड़ती है, सुधीर **Page** पे लिखी ग़ज़ल की चार Line ही पढ़ता है की उसके हाथ **Canvas** पे चलने लगते है , ग़ज़ल ख़तम होने का साथ साथ **Canvas** पे एक खूब सूरत सी तस्वीर बन जाती है,सुधीर तस्वीर देख के दंग रहा जाता,

सुधीर - भाई एक दम गंडास , के सुथरी छोरी की तस्वीर बनी भाई

सुधीर उपर छत की तरफ़ देखता हुआ कहता है," रे राम मने जिसे सुथरी छोरी की तस्वीर बनाई तने भी कदी इसी सुथरी छोरी बनाई".

सुधीर भगवान को ताना मार के **shading** करने मे लग जाता है आज पूरा घर निहार को तैयार करने मे लगा है,राहु निहार के जूते पोलिश करने मे तो केतु कपड़े प्रेस करने मे लगा है,सुधीर अपने साथ रह रहे 2 लड़को के नाम यही रखे है सुधीर भाई ने नाश्ता का मोर्चा संभाला हुआ है ,ओर किरण भाई हमेशा की तराहा 6 ब्जे कि shift पे रवाना .

निहार - ओ राहु-केतु कपड़े प्रेस हो गये ?(निहार रूम मेट को आवाज़ लगांते हुआ पूछता है.

निहार - सुधीर भाई कोई सुथरा सा pen दे दो (निहार shirt पहनता हुआ सुधीर भाई को बूलता है
सुधीर मैदान के दूसरे छोर से आवाज़ लगता हुआ

सुधीर - **shelf** के पास या **canvas stand** के धोरे होगा (निहार **canvas stand** ढूढ़ता हुआ जैसे ही **canvas** से **cover** हटाता है

निहार - नंदनी ?

निहार - सुधीर भाई ये नंदनी की तस्वीर आप ने बनाई ? सुधीर **caprin** पहने हाथ मे कड़छी लिए

सुधीर - भाई कोन सी नंदनी ,?

निहार - ये नंदनी की तस्वीर , कहा से देख कर बनाई आप ने ,

सुधीर - भाई मने तो तेरी लिखी ग़ज़ल पढ़ी, ओर जो तस्वीर दिमाग़ मे बनी मने छाप दी,

निहार - भाई यही तो वो नंदनी है जिस देख कर आज कल ग़ज़ल लिखी जा रही है ,

सुधीर - मतलब ये छोरी असली मे है , ?

निहार - हा सुधीर भाई

सुधीर - मतलब राम मेरे तस्वीर बनान से पलाया इस छोरी ने बना चुका है?

निहार - हा सुधीर भाई

सुधीर - भाई आज तो फिर इस सुथरी छोरी के दर्शन करा गे ,कहा पाई जाओगी

निहार - सुधीर भाई छोरी तो बहुत सुथरी है, मगर इसकी किस्मत इतनी सुथरी नही है

सुधीर - मतलब?

निहार - प्यार के लिए शादी तक तोड़ दी,भगवान ने दिल मे मोहोब्बत तो दी मगर महबूब छीन लिया , इसका एक **Boy friend** था बेचारी पिछले एक महीने से उसे **delhi** मे पागलो की तरहा ढूँढ रही है,

सुधीर - भाई ये ज़िस्म 3 के जमाने मे भी लोग सच्चा प्यार करे है?, भाई इस देवी के दर्शन कहा होंगे ?

निहार - शाम को आ रहे हो ना वही होंगे, फिर सुधीर भाई ये बताओ घाल के के जाउ ?

सुधीर - भाई न्यू कर किरण भाई का **sky blue** वाला Lucky **coat** घाल जा

निहार - मरवाओगे भाई,

सुधीर - अरे छोरे घाल जा , आज तेरा दिन है, मैं देख लूँगा

सुधीर को आज थोड़ी सी बढ़ी **shev** ज़यादा लग रही थी, सुधीर सुबहा से 4 बार शीशे मे देख चुका था, ओर अभी उस्तरा चलना शिरू ही होता है की दरवाजे पे घंटी

सुधीर दरवाजा खोलता है

सुधीर - अरे किरण भाई आज जल्दी ?

किरण - अरे आज अपने ग़ालिब का दिन है मैं जाउंगा तो उसे अच्छा लगेगा

सुधीर - भाई आप भी जाओगे,भाई चाय बनाउ पीओगे ?

किरण - अरे तुम shev करो,

किरण जैसे ही **room** मे जाता है , ओर कपड़े बदलने के लिए अलमारी खोलता है,

किरण - अरे अंदर कोई आया था क्या,

सुधीर - भाई ग़ालिब आप का **coat** पहन गया है

किरण - oo कोई बात नही , आज मुशायरे मे लोंडा आग लगा देगा

किरण जुतो पे जमी मिटी देखता हुआ

किरण - **Brown Polish** है क्या ?

सुधीर - है भाई हमारे **room** मे होगी

किरण भाई को **Polish** ढूंढते 5 **minute** हो चुके थे,
सुधीर **shev** बनाता हुआ **Polish** ढूँढने के लिए कमरे की दरवाजे पे खड़ा

सुधीर- किरण भाई **canvas stand** देखो,सुबहा राहु-केतु ने **polish** ली थी सालो ने लगता है वही रख दी

Polish उठाते किरण की नज़र **Transparent canvas cover** के पीछे **canvas** पे बने **sketch** पे पड़ती है,
सुधीर **scketch** देखने के लिए जैसे ही **canvas cover** उठाता है

किरण - नंदनी ,

किरण की आवाज़ ना चाहते हुए भी कमरे की चोखट लाँघ **vash vashan** के पास खड़े सुधीर के कानो तक पहुच जाती है

सुधीर हाथ मे **rajor** लिए दरवाजे तक आता है

दरवाजे पे खड़े सुधीर से

किरण - नंदनी की तस्वीर किसने बनाई ?

सुधीर - किरण भाई, निहार भाई ने एक ग़ज़ल लिखी थी, ग़ज़ल पढ़ कर मेरे दीमाख मे जो तस्वीर बनी मने बना दी

सुधीर - मतलब आप भी जानते हो नंदनी को ?

किरण - हा नैनीताल मे मिली थी , दोस्त की बहन थी, शादी हो गई , अब तो 2 ,2 बच्चे

ना चाहते हुए भी जैसे जवाब किरण की ज़ुबान पे आ ही गया

किरण इस तरहा हताश हो कर जवाब देता है जैसे **Train** पीछे कोई काफ़ी देर तक भगा हो, ओर आख़िर मे हिम्मत हार हाफ्ते हाफ्ते रुक गया हो

किरण - मगर आप भी से मतलब,ओर कौन जानता है नंदनी को

सुधीर - अरे किरण भाई ये निहार की भी दोस्त है,भाई बहुत बहादुर लड़की है,अपने **boy friend** के लिए शादी तोड़ दी, ओर महीना हो गया,पागलो की तरहा **delhi** मे ढूँढ रही है उसे

अपने अतीत के दल दल में डूब रहे किरण को सुधीर ने मानो हाथ पकड़ के खीच लिया हो

मतलब - नंदनी **delhi** मे है उसने शादी नही की,सुधीर तुम्हे पता है नंदनी कहा है ,

किरण का ये रूप देख कर सुधीर कुछ समझ नही पा रहा था ,

सुधीर - हा निहार भाई के मुश्यारे मे

नंदनी को **delhi** आए एक महीने हो चला था नंदनी के घर से रोज **Phone** आते,नंदनी आज कल आज कल बोल के घर वालो को टरका देती , नंदनी की तलाश अभी कहा ख़तम हुई थी रोज वो ये सोच कर घर से निकलती की शायद आज वो उसे ढूँढ लेगी , मगर रोज वो मायूस ही लोटती जैसे जैसे दिन बीतते जा रहे थे नंदनी की मायूसी बढ़ती जा रही थी नंदनी ने समान तो हफ्ते पहले ही **Pack** कर लिया था, बस इंतज़ार था तो 14 **Feb** का कवि सम्मेलन का

नंदनी की **Train** रत 9 बजे की है, O**xford book center** मे अपना समान साथ ले कर आती है,नंदनी की **room mate** आज उसके साथ थी,आज निहार से मिलने का मोका वो भी नही छोड़ना चाहती थी

कवि सम्मेलन शिरु हुआ आधा घंटा हो चुका था,ना तो नंदनी पहुचि थी ओर ना निहार के कबीले का कोई

निहार शेर पढ़ने **stage** पे जैसे ही चढ़ता है
निहार I love u , पीछे अपनेBoy friend के कंधे पे हाथ रख के खड़ी D U की लड़किया ज़ोर से एक सुर मे बोलती है

निहार - Thanks

निहार माइक टेस्ट कर

निहार - Ladies and....

निहार I love u will u merry me ?(एसे perposal निहार को शेर पढ़ते वक़्त अक्सर मिला करते

निहार -I love u too , Let me complete , Please

शोर इतना था की निहार शिरू ही नही कर पा रहा था

निहार जैसे शिरू करता है

" तेरी तस्वीर देखी तो ग़ज़ल लिख दी मेने ..."

वाह वाह , निहार I love u मे काव्य सम्मेलन मे कविता सुन रही एक लड़की की आवाज़ फिर से गूँजती है

निहार अभी शेर पढ़ ही रहा होता है कि नंदनी आ जाती है,निहार को नीले कोट मे देखकर नंदनी हैरान रह जाती है
नदनी की आँखे भर आती है

निहार- शेर ख़तम कर सीधा नंदनी के पास आता है

नंदनी निहार के पहने कोट को हाथ लगा पूछती है

नंदनी - ये कोट कहा से मिला तुम्हे

निहार - अरे माँगा हुआ है, पहले ये बताओ सुबहा से कहा थी ?

नंदनी - पहले ये बताओ, किरण का कोट तुम्हारे पास कहा से आया

निहार - अरे उसके अलमारी से निकाला है, पर ये बताओ जा कहा रही हो

नंदनी - अरे ये तो मेरे किरण का कोट है, कहा है किरण तुम मुझे उस के पास ले चलो

नंदनी कोट का कॉलर पकड़ गिड गिडाने लगती है,निहार इस से पहले कुछ समझ पाता, किरण ओर सुधीर भी पीछे से आ जाते है

किरण पीछे से नंदनी को देख आवाज़ लगता है

किरण - नंदनी ...

नंदनी पीछे मूड के देखती है, नंदनी के आसू किरण की आँखो मे थे ओर किरण के नंदनी की.

निहार के हुनर में वो शिदत है वो जिस चहरे को देख कर निहार गजल लिखता वही चहरा गजल पढ़ने वाले को उस गजल में दिखाई देता पाक और साफ़ दिलो पे हमेशा खुदा कि इनायत रहती है

किरण ओर नंदनी ,किसी भी लफ़जो मे निहार का शुक्रिया अदा नही कर सकते ,सच्चे इश्क़ के आगे अक्सर किस्मत अपने घुटने टेक देती है , इश्क़ तो वो इबादत है, की उपर वाले को अपना लिखा मिटा कर एक बार दोबारा लिखना पड़ता है और निहार जैसे Poet किस्मत के चहरे पे हैरानियाँ लिखते रहेंगे

दामिनी की आबरू को तार तार करने वाले दरिंदे जब जब, दिलो से मोहोब्बत के जस्बे को निकालने की नाकाम कोशिश करंगे ,तब तब निहार जैसे **Poet** , हिन्दुस्तान की पाक ज़मीन पे जनम लेते रहँगे .

'धन्यवाद '

जीत भाटिया "तरकश "